Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

भारत में एकात्म मानववाद की वर्तमान प्रासंगिकता

ओमप्रकाश योगी*

* व्याख्याता (राजनीति विज्ञान) श.ज.वै.रा.उ.मा.वि.मातृकुण्डिया, राशमी, जिला- चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत

प्रस्तावना – पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद एक ऐसी विचारधारा है जो एक चक्र के माध्यम से प्रस्तुत की जा सकती है जिसकी धुरी में व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ा एक परिवार, परिवार से जुड़ा हुआ एक समाज, जाति फिर राष्ट्र, विश्व और फिर अनंत ब्रह्मांड को अपने में सम्मिलित किये हुए है। एकात्म मानववाद का प्राथमिक उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति और समाज की आवश्यकता को संतुलित करते हुए प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना है। सतत् विकास के साथ विकास को आगे बढ़ाना है जिससे भावी पीढ़ियों को भी संसाधनों का पुन: उपयोग करने में सुलभता हो सके।

आज पूरे विश्व भर में जलवायु आपदाएं बढ़ती जा रही है जिससे संधारणीय विकास में मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। वैश्विक स्तर पर बड़ी संख्या में लोगों को गरीबों का सामना करना पड़ रहा है। कई नए मॉडल इन समस्याओं से निपटने के लिए लाए गए किंतु वे सभी असफल होते दिख रहे हैं।

सामान्यत: भारत के राजनैतिक क्षेत्र में स्थापित सभी दल यह सोचते थे कि हमें कुछ संशोधनों के साथ इन पाश्चात्य वादों को ही स्वीकारना पडेगा क्योंकि हमारे पास कोई अन्य चिंतन नहीं है। हम तो राष्ट्र थे ही नहीं। पाश्चात्यों ने ही आकर हमको राष्ट्र बनने के लिए तैयार किया है। उनका विचार है हम राष्ट्र बनने जा रहे हैं या हम नवोदित राष्ट्र है, आदि आदि।

भारतीय जनसंघ या भारतीय जनता पार्टी भारत को प्राचीन एवं सनातन राष्ट्र मानती है। पश्चिम की राष्ट्र-राज्य परिकल्पना से पुरानी कल्पना भारत के 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' की है। भारतीय संस्कृति की एक गौरवसम्पन्न ज्ञान-परम्परा हैं हमें इसी ज्ञान-परम्परा में भारत का भविष्य खोजना चाहिए।

मानव की तरफ देखने की पाश्चात्य दृष्टि खण्डित हैं उनका व्यक्तिवाद, समाजवाद का दुश्मन है तथा समाजवाद, व्यक्तिवाद का शत्रु है। वे प्रकृति पर मानव की विजय चाहते हैं, इस प्रकार यहां भी प्रकृति बनाम मानव उनका समीकरण है। सेक्यूलरवाद को अपना कर उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन को अध्यात्म से काट लिया, अत: भौतिकवाद बनाम अध्यात्म, स्टेट बनाम चर्च तथा रिलिजन बनाम सांइस के द्वंद्वमूलक समीकरण वहां उत्पन्न हुये। दीनदयाल जी मानते थे कि पश्चिम की यह बहस भी एक मानवीय बहस है, इसे हमें जानना चाहिए तथा इससे कुछ सीखना भी चाहिये, लेकिन हमें इन द्वंद्वमूलक निष्कर्षों का अनुयायी नहीं बनना चाहिये।

अत: मौलिक भारतीय चिन्तन के आधार पर विकल्प देने की जिम्मेदारी उन्होंने स्वयं स्वीकार की। भारतीय जनसंघ की पहली पीढ़ी के सभी कार्यकर्ता इस काम में लगे। 1959 का पूना अभ्यासवर्ग, 1964 का ग्वालियर अभ्यास वर्ग तथा 1964 के संघ शिक्षा वर्गों के इस दृष्टि से विशेष महत्व है। इन वर्गों में परिपक्व हुये विचारों को दीनदयाल जी ने सिद्धांत और नीति प्रलेख में 'एकात्म मानववाद' नाम से प्रस्तुत किया। 1965 में भारतीय जनसंघ के विजयवाड़ा वार्षिक अधिवेशन में इसे मूल दर्शन के रूप में स्वीकार किया गया तथा 1985 में भारतीय जनता पार्टी ने भी इसे अपने मूल दर्शन के रूप में स्वीकार किया।

यह विचार व्यक्ति बनाम समाज नहीं वरन व्यक्ति और समाज की एकात्मता का विचार है। यह मानव बनाम प्रकृति नहीं वरन मानव के साथ प्रकृति की एकात्मता का विचार है। भौतिक बनाम अध्यात्मिक नहीं वरन इनकी एकात्मता का विचार है। भारत में इसे धर्म कहा गया है 'यतो अभ्युदय नि:श्रेयस संसिद्धि स धर्म।' अर्थात् यह व्यष्टि, समिष्ट, सृष्टि व परमेष्ठी की एकात्मता का विचार है।

यह विचार दृश्यमान पृथकताओं में एकात्मता के सूत्र खोजता है। संसार में पृथकता नहीं विविधता हैं, जो 'पिंड' में है वही 'ब्रह्माण्ड' में है। आज मानव अपने को व्यक्ति मान कर अपनी सामाजिक संस्थाओं से युद्ध कर रहा है, परिवार, जाति, वंश , पंचायत सब को अपना दुश्मन मान रहा है। समाजवाद के नाम पर तानाशाहियों का सृजन कर रहा है, विकास के नाम पर प्रकृति से युद्ध कर रहा है, पर्यावरण का विनाश कर भयानक विभीषिकाओं को आमंत्रित कर रहा है। अध्यात्म का निषेध कर भोगेन्द्रियों का गलाम बन रहा है। सुख की खोज में दु:ख कमा रहा है तथा आनंद की अवधारणा से अपरिचित रह रहा है।

भारतीय परम्परा इन पृथकताओं का निषेध करती है वह जड़-चेतन सभी से अपनी रिश्ते स्थापित करती है। धरती 'माता' है चन्द्रमा मामा है पर्वत यदेवता' है, नदियां 'माता' है। समाज का हर व्यक्ति परस्पर जुड़ा हुआ है, यह संसार परायेपन की जगह नहीं, यह 'वसुधा तो एक कुटुम्ब' है आदि विचार मानव को असम्बद्धता, पृथकता तथा द्वन्द्वशीलता के सम्बंधों से निजात दिलाते है।

एकात्मता, समग्रता में निहित रहती है। समग्रता के अभाव में खण्ड दृष्टि से मानव आक्रांत होता है। जैसे ब्रह्माण्ड की समग्रता है, वैसे ही व्यक्ति की भी समग्रता है। व्यक्ति अर्थात केवल शरीर नहीं, उसके पास मन है, बुद्धि है और आत्मा भी है। यदि इन चारों में से एक की भी उपेक्षा हो जाये तो व्यक्ति का सुख विकलांग हो जायेगा। इन चारों के पृथक पृथक सुख से व्यक्ति सुखी नहीं होता, उसे तो एकात्म एवं धनीभूत सुख चाहिये। जिसे आनंद कहते है।

वैसे ही समाज केवल सरकार नहीं है, उसकी अपनी संस्कृति है, जन एवं देश है। इन चारों के सम्यक संचालन के बिना समष्टि के सुख का संधान नहीं होता।

इस प्रकार सृष्टि के पंच-महाभूत (पृथ्वी, जल, आकाश, प्रकाश व वायु) हैं, जिनके साथ न्याय-संगत व्यवहार होना चाहिये तथा अदृश्य किन्तु अनुभूति में आने वाले आध्यात्मिक तत्वों से भी योग्य साक्षात्कार होना चाहिये। तभी मानव सुखी होगा।

व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि तथा परमेष्ठी से एकात्म हुआ मानव ही विराट पुरुष है। इसके पुरुषार्थ चतुर्यामी है 'धर्म, अर्थ काम और मोक्ष' ये पुरुषार्थ मानव की परिस्थति निरपेक्ष आवश्यकतायें हैं, इनकी सम्पूर्ति करना समाज व्यवस्था का काम है।

अत: आज दुनिया को एक ऐसे मॉडल की तलाश है जो अपनी प्रकृति में एकीकृत हो।

आज भारत जैसे देश में बढ़ती तीव्र जनसंख्या के चलते गरीबी, बेरोजगारी बढ़ती जा रही है जिसमें अल्पकालिक उपायों के अलावा कोई उपाय नहीं है।

देश में आर्थिक असमानता की खाई बढ़ती जा रही है जिससे गरीब-अमीर के जीवन स्तर में बड़े अंतर के साथ उनमें असमानता और भेदभाव भी बढ़ते जा रहे हैं, इन सभी के चलते गरीब लोग अपनी आजीविका एवं जीवन स्तर को हीन महसूस करते हैं तथा राज्य व भगवान या ईश्वर के दिए हुए वरदान के रूप में मानकर अपनी आत्मा को तृप्त करते हैं।

भारत आज वैश्विक सूचकांक 2023 में 125 देशों में से 111वें स्थान पर खड़ा है जो अपने आप में विचारणीय प्रश्न है।

स्वतंत्र भारत के बाद समाज वैज्ञानिकों ने देश की तमाम व्यवस्थाओं को सुधारने को लेकर पाश्चात्य पद्धति को अपनाया और पूंजीवाद, साम्यवाद जैसी तरह तरह की धाराओं को लेकर उनका खंड-खंड विश्लेषण कर उनको देखा और उनमें सुधार को लेकर कई प्रयास किए, लेकिन वे सभी असफल हुए। अत: भारत को गहराई से समझने के लिए एकात्म मानववाद जैसा समग्र दृष्टिकोण चाहिए जिसमें व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक इसकी प्रतिच्छाया नज़र आती है। क्योंकि जब तक मनुष्य का समग्रता एवं सम्पूर्णता से चिंतन नहीं किया जायेगा तब तक उसकी समस्याओं का समग्र समाधान नहीं हो पायेगा।

इन सभी मुद्दों के साथ राज्य के सामाजिक आर्थिक राजनीतिक पहलुओं को एकीकृत ढांचे में पिरोकर ही देश को उन्नति की राह पर आगे बढ़ाया जा सकता है क्योंकि यह सिद्धांत विविधता को प्रोत्साहन देता है तथा सभी वर्गों के लिए समानता के साथ अपने पक्षों को मजबूत करने का पूरा मौका देता है क्योंकि भारत जैसे देश के लिए अधिक उपयोगी है क्योंकि जिस देश में अनेक को बोलियां, भाषाएं तथा सांस्कृतिक विविधता तथा आर्थिक विविधता भी यहां है जिससे सभी लोगों को समभाव महसूस हो सके। जिसके अंतर्गत विकास के केंद्र में मानव हो जिससे उसका पूरा कल्याण हो सकें। पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा दिया गया यह सिद्धांत पूंजीवाद एवं समाजवाद के मध्य एक ऐसी राह के पक्षधर है जिसमें दोनों प्रणालियों के गुण तो मौजूद हो लेकिन उनके अतिरेक एवं अलगाव जैसे अवगुण ना हो। यही दीनदयाल जी के चिंतन का भी आधार था। इसीलिए वे गाँधी के 'सर्वोदय' से आगे 'अंत्योदय' की बात कर पाए। विकास की दृष्टि से हाशिए पर खड़ा अंतिम व्यक्ति उनके आर्थिक चिंतन का केंद्र बिंदु था। उसके विकास में वे समाज एवं राष्ट्र का वास्तविक विकास देखते हैं। वे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जैसे पुरुषार्थ चतुष्टय में से किसी की भी उपेक्षा नहीं करते। किसी को कमतर नहीं आँकते। उनका दर्शन काल्पनिक एवं वायवीय नहीं, यथार्थपरक एवं व्यावहारिक है। हिंसा, कलह एवं आतंक से पीड़ित मानवता के लिए उनका दर्शन एक वैश्विक वरदान है, समाधनपरक उपचार है। विभिन्न राजनीतिक दलों, कार्यकर्त्ताओं, नेताओं के लिए उनका व्यक्तित्व एक ऐसा दर्पण है, जिसमें देखकर-झाँककर वे अपना-अपना आकलन कर सकते हैं। बल्कि साधनों के पीछे भागते एवं भव्यता के आडंबर रचते सभी दलों, नेताओं एवं राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं को वे सचेत एवं आगाह करते प्रतीत होते हैं कि 'प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा एवं सत्ता भी - साधनों से नहीं, साधना से मिलती है।'

निष्कर्षत: - भारत जैसे देश के लिए लोक कल्याणकारी राज्य की धारणा को फलीभूत करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना है एवं 'अंत्योदय' अर्थात समाज के निचले स्तर पर स्थित व्यक्ति के जीवन स्तर में सुधार करना है यह दर्शन न केवल भारत बल्कि अन्य विकासशील देशों में भी सदैव उपयोगी साबित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. एकात्म मानववाद- पं. दीनदयाल उपाध्याय
2. www.panchjanya.com
3. www.bjp.org
4. www.wikipedia.org

****